आँसू

जो घनीभूत पीडा थी
मस्तक में स्मृति-सी छाई
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आई।

जयशङ्करप्रसाद

प्रथम संस्करण '८२ वि०
द्वितीय ,, ९० वि०
तृतीय ,, ९५ वि०
चतुर्थ ,, ९६ वि०
मूल्य ॥)

आँसू के इस दूसरे संस्करण में, छन्दों का क्रम, कुछ बदल दिया गया है। कुछ छन्द और भी जोड़ दिये गये, जो पहले संस्करण के बाद लिखे गये थे।

—प्रकाशक

आँसू

इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यो हाहाकार स्वरो में
वेदना असीम गरजती ?

आँसू

मानस - सागर के तट पर
क्यो लोल लहर की घातें
कल-कल ध्वनि से हैं कहतीं
कुछ विस्मृत बीती बाते ?

आती है शून्य क्षितिज से
क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी
टकराती बिलखाती सी
पगली सी देती फेरी ?

क्यों व्यथित व्योम - गंगा सी
छिटका कर दोनो छोरें
चेतना - तरङ्गिनि मेरी
लेती है मृदुल हिलोरें ?

बस गई एक बस्ती है
स्मृतियों की इसी हृदय में
नक्षत्र - लोक फैला है
जैसे इस नील निलय में।

ये सब स्फुलिङ्ग हैं मेरी
इस ज्वालामयी जलन के
कुछ शेष चिन्ह हैं केवल
मेरे उस महा मिलन के।

आँसू

शीतल ज्वाला जलती है
ईंधन होता दृग - जल का
यह व्यर्थ साँस चल-चल कर
करती है काम अनिल का ।

वाडवज्वाला सोती थी
इस प्रणय-सिंधु के तल में
प्यासी मछली - सी आँखें
थी विकल - रूप के जल में ।

बुलबुले सिन्धु के फूटे
नक्षत्र - मालिका टूटी
नभ - मुक्त - कुन्तला धरणी
दिखलाई देती लूटी ।

आँसू

छिल - छिल कर छाले फोडे
मल-मल कर मृदुल चरण में
धुल-धुल कर वह रह जाते
आँसू करुणा के कण में ।

इस विकल वेदना को ले
किसने सुख को ललकारा
वह एक अबोध अकिञ्चन
बेसुध चैतन्य हमारा ।

अभिलाषाओं की करवट
फिर सुप्त व्यथा का जगना
सुख का सपना हो जाना
भींगी पलकों का लगना ।

आँसू

इस हृदय-कमल का घिरना
अलि-अलकों की उलझन मे
आँसू-मरन्द का गिरना
मिलना निश्वास-पवन मे ।

मादक थी—मोहमयी थी
मन बहलाने की क्रीडा
अब हृदय हिला देती है
वह मधुर प्रेम की पीडा ।

सुख आहत शान्त उमगे
बेगार साँस ढोने मे
यह हृदय समाधि बना है
रोती करुणा कोने में ।

चातक की चकित पुकारें
श्यामा - ध्वनि सरल रसीली
मेरी करुणार्द्र - कथा की
टुकड़ी आँसू से गीली ।

बेसुध जो अपने सुख से
जिनकी है सुप्त व्यथायें
अवकाश भला है किनको
सुनने की करुण कथायें ।

आँसू

जीवन की जटिल समस्या
है बढ़ी जटा सी कैसी
उड़ती है धूल हृदय में
किसकी विभूति है ऐसी ?

जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति सी छाई
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आई ।

मेरे क्रन्दन मे बजती
क्या वीणा ?—जो सुनते हो
धागों से इन आँसू के
निज करुणा-पट बुनते हो ।

—

रो-रो कर सिसक-सिसक कर
कहता मैं करुण-कहानी
तुम सुमन नोचते सुनते
करते जानी अनजानी।

मैं बल खाता जाता था
मोहित बेसुध बलिहारी
अन्तर के तार खिंचे थे
तीखी थी तान हमारी।

झंझा झकोर गर्जन था
बिजली थी नीरद माला
पाकर इस शून्य हृदय को
सबने आ डेरा डाला।

आँसू

घिर जाती प्रलय घटायें
कुटिया पर आकर मेरी
तम-चूर्ण बरस जाता था
छा जाती अधिक अँधेरी।

बिजली माला पहने फिर
मुसक्याता सा आँगन में
हाँ, कौन बरस जाता था
रस-बूँद हमारे मन में ?

तुम सत्य रहे चिर सुन्दर
मेरे इस मिथ्या जग के
थे केवल जीवन - सगी
कल्याण कलित इस मग के।

आँसू

कितनी निर्जन रजनी में
तारों के दीप जलाये
स्वर्गङ्गा की धारा में
उज्ज्वल उपहार चढाये !

गौरव था, नीचे आये
प्रियतम मिलने को मेरे
मै इठला उठा अकिञ्चन,
देखे ज्यों स्वप्न सवेरे ।

मधु राका मुसक्याती थी
पहले देखा जब तुमको
परिचित-से जाने कब के
तुम लगे उसी क्षण हमको !

आँसू

परिचय राका जलनिधि का
जैसे होता हिमकर से
ऊपर से किरणें आतीं
मिलती हैं गले लहर से।

मैं अपलक इन नयनों से
निरखा करता उस छवि को
प्रतिभा डाली भर लाता
कर देता दान सुकवि को।

निर्झर-सा झिर-झिर करता
माधवी-कुञ्ज छाया में
चेतना बही जाती थी
हो मन्त्र-मुग्ध माया में।

आँसू

पतझड था, झाड खडे थे
सूखी सी फुलवारी में
किसलय नव कुसुम बिछाकर
आये तुम इस क्यारी में।

शशि-मुख पर घूँघट डाले
अंचल मे दीप छिपाये
जीवन की गोधूली में
कौतूहल से तुम आये!

घन में सुन्दर बिजली-सी
बिजली में चपल चमक सी
आँखों मे काली पुतली
पुतली मे श्याम झलक सी।

आँसू

प्रतिमा मे सजीवता सी
बस गई सुछबि आँखो मे
थी एक लकीर हृदय में
जो अलग रही लाखो में।

माना कि रूप - सीमा है
सुन्दर! तव चिर यौवन मे
पर समा गये थे, मेरे
मन के निस्सीम गगन में!

लावण्य - शैल राई सा
जिस पर वारी बलिहारी
उस कमनीयता कला की
सुषमा थी प्यारी - प्यारी।

बाँधा था विधु को किसने
इन काली जंजीरों से
मणि वाले फणियो का मुख
क्यों भरा हुआ हीरो से ?

काली आँखो में कितनी
यौवन के मद की लाली
मानिक - मदिरा से भर दी
किसने नीलम की प्याली ।

आँसू

तिर रही अतृप्ति जलधि में
नीलम की नाव निराली
काला - पानी वेला सी
है अञ्जन - रेखा काली ।

अंकित कर क्षितिज - पटी को
तूलिका बरौनी तेरी
कितने घायल हृदयो की
बन जाती चतुर चितेरी ।

कोमल कपोल पाली में
सीधी सादी स्मित - रेखा
जानेगा वही कुटिलता
जिसने भौं मे बल देखा ।

आँसू

विद्रुम सीपी सम्पुट में
मोती के दाने कैसे ?
है हस न, शुक यह, फिर क्यो
चुगने को मुक्ता ऐसे ?

विकसित सरसिज - वन वैभव
मधु - ऊषा के अञ्चल मे
उपहास करावे अपना
जो हँसी देख ले पल में !

मुख - कमल समीप सजे थे
दो किसलय से पुरइन के
जल विन्दु सदृश ठहरे कब
उन कानो मे दुख किनके ?

थी किस अनङ्ग के धनु की
वह शिथिल शिञ्जिनी दुहरी
अलबेली बाहुलता या
तनु छवि - सर की नव लहरी ?

चञ्चला स्नान कर आवे
चन्द्रिका पर्व में जैसी
उस पावन तन की शोभा
आलोक मधुर थी ऐसी !

छलना थी, तब भी मेरा
उसमें विश्वास घना था
उस माया की छाया में
कुछ सच्चा स्वयं बना था ।

आँसू

वह रूप रूप था केवल
या हृदय रहा भी उसमें
जडता की सब माया थी
चैतन्य समझ कर मुझमें ।

मेरे जीवन की उलझन
बिखरी थीं उनकी अलकें
पी ली मधु मदिरा किसने
थी बन्द हमारी पलकें ?

ज्यों ज्यों उलझन बढती थी
बस शान्ति विहँसती बैठी
उस बंधन में सुख बँधता
करुणा रहती थी ऐंठी ।

हिलते द्रुम-दल कल किसलय
देती गलबाँही डाली
फूलों का चुम्बन, छिड़ती—
मधुपों की तान निराली।

मुरली मुखरित होती थी
मुकुलो के अधर विहँसते
मकरन्द भार से दब कर
श्रवणों मे स्वर जा बसते।

परिरम्भ कुम्भ की मदिरा
निश्वास मलय के झोके
मुख - चन्द्र चाँदनी जल से
मै उठता था मुँह धोके ।

थक जाती थी सुख रजनी
मुख - चन्द्र हृदय में होता
श्रम - सीकर सदृश नखत से
अम्बर पट भींगा होता ।

सोयेगी कभी न वैसी
फिर मिलन कुञ्ज मे मेरे
चाँदनी शिथिल अलसाई
सुख के सपनों से मेरे

आँसू

लहरों मे प्यास भरी है
हैं भँवर पात्र भी खाली
मानस का सब रस पीकर
लुढका दी तुमने प्याली।

किञ्जल्क जाल हैं बिखरे
उडता पराग है रूखा
है स्नेह सरोज हमारा
विकसा, मानस में सूखा।

छिप गई कहाँ छूकर वे
मलयज की मृदुल हिलोरें
क्यो घूम गई है आकर
करुणा-कटाक्ष की कोरे ?

विस्मृति है, मादकता है
मूर्च्छना भरी है मन मे
कल्पना रही, सपना था
मुरली बजती निर्जन में ।

आँसू

हीरे-सा हृदय हमारा
कुचला शिरीष कोमल ने
हिम शीतल प्रणय अनल बन
अब लगा विरह से जलने।

अलियों से आँख बचा कर
जब कुञ्ज सकुचित होते
धुँधली, सन्ध्या, प्रत्याशा
हम एक - एक को रोते।

जल उठा स्नेह, दीपक सा,
नवनीत हृदय था मेरा
अब शेष धूम - रेखा से
चित्रित कर रहा अँधेरा।

नीरव मुरली, कलरव चुप
अलिकुल थे बन्द नलिन मे
कालिन्दी बही प्रणय की
इस तममय हृदय पुलिन मे।

कुसुमाकर रजनी के जो
पिछले पहरो मे खिलता
उस मृदुल शिरीष सुमन - सा
मै प्रात धूल मे मिलता।

व्याकुल उस मधु सौरभ से
मलयानिल धीरे धीरे
निश्वास छोड़ जाता है
अब विरह तरङ्गिनि तीरे।

आँसू

चुम्बन अङ्कित प्राची का
पीला कपोल दिखलाता
मै कोरी आँख निरखता
'पथ, प्रात समय सो जाता।

श्यामल अञ्चल धरणी का
भर मुक्ता आँसू कन से
छूँछा बादल बन आया
मैं प्रेम प्रभात गगन से।

विष प्याली जो पी ली थी
वह मदिरा बनी नयन में
सौन्दर्य पलक प्याले का
अब प्रेम बना जीवन मे।

कामना - सिन्धु लहराता
छवि पूरनिमा थी छाई
रतनाकर बनी चमकती
मेरे शशि की परछाई

छायानट छवि परदे में
सम्मोहन वेणु बजाता
सन्ध्या कुहुकिनि अञ्चल में
कौतुक अपना कर जाता।

मादकता से आये तुम
सञ्ज्ञा से चले गये थे
हम व्याकुल पडे बिलखते
थे, उतरे हुए नशे से।

अम्बर असीम अन्तर में
चञ्चल चपला से आकर
अब इन्द्रधनुष सी आभा
तुम छोड़ गये हो जाकर !

मकरन्द मेघ - माला सी
वह स्मृति मदमाती आती
इस हृदय विपिन की कलिका
जिसके रस से मुसक्याती।

है हृदय शिशिरकण पूरित
मधु वर्षा से शशि तेरी
मन - मन्दिर पर बरसाता
कोई मुक्ता की ढेरी!

आँसू

शीतल समीर आता है
कर पावन परस तुम्हारा
मै सिहर उठा करता हूँ
बरसा कर आँसू - धारा ।

मधु मालतियाँ सोती हैं
कोमल उपधान सहारे
मै व्यर्थ प्रतीक्षा लेकर
गिनता अम्बर के तारे ।

निष्ठुर ! यह क्या, छिप जाना ?
मेरा भी कोई होगा
प्रत्याशा विरह - निशा की
हम होंगे औ' दुख होगा ।

जब शान्त मिलन सन्ध्या को
हम हेम जाल पहनाते
काली चादर के स्तर का
खुलना न देखने पाते।

अब छुटता नहीं छुडाये
रँग गया हृदय है ऐसा
आँसू से धुला निखरता
यह रग अनोखा कैसा।

आँसू

कामना कला की विकसी
कमनीय मूर्ति बन तेरी
खिंचती है हृदय पटल पर
अभिलाषा बन कर मेरी।

मणि-दीप लिये निज कर में
पथ दिखलाने को आये
वह पावक पुञ्ज हुआ अब
किरनों की लट बिखराये।

चढ गई और भी ऊंची
रूठी करुणा की वीणा
दीनता दर्प बन बैठी
साहस से कहती पीडा।

यह तीव्र हृदय की मदिरा
जी भर कर—छक कर मेरी
अब लाल आँख दिखला कर
मुझको ही तुमने फेरी।

नाविक ! इस सूने तट पर
किन लहरों मे खे लाया
इस बीहड वेला मे क्या
अब तक था कोई आया ?

उस पार कहाँ फिर जाऊँ
तम के मलीन अञ्चल में
जीवन का लोभ नहीं, वह
वेदना छद्म मय छल में ।

आँसू

प्रत्यावर्तन के पथ में
पद - चिन्ह न शेष रहा है
डूबा है हृदय मरुस्थल
आँसू नद उमड रहा है।

अवकाश शून्य फैला है
है शक्ति न और सहारा
अपदार्थ तिरूँगा मैं क्या
हो भी कुछ कूल किनारा।

तिरती थी तिमिर उदधि में
नाविक ! यह मेरी तरणी
मुख चन्द्र किरण से खिंच कर
आती समीप हो धरणी।

आँसू

सूखे सिकता सागर में
यह नैया मेरे मन की
आँसू की धार बहा कर
खे चला प्रेम बेगुन की।

यह पारावार तरल हो
फेनिल हो गरल उगलता
मथ डाला किस तृष्णा से
तल में बड़वानल जलता।

निश्वास मलय मे मिलकर
छाया पथ छू आयेगा
अन्तिम किरणों बिखरा कर
हिमकर भी छिप जायेगा।

आँसू

चमकूँगा धूल कणों में
सौरभ हो उड़ जाऊँगा
पाऊँगा कहीं तुम्हें तो
ग्रह - पथ में टकराऊँगा ।

इस यान्त्रिक जीवन में क्या
ऐसी थी कोई क्षमता
जगती थी ज्योति भरी सी
तेरी सजीवता ममता ।

है चन्द्र हृदय में बैठा
उस शीतल किरण सहारे
सौन्दर्य सुधा बलिहारी
चुगता चकोर अंगारे ।

चलने का सम्बल लेकर
दीपक पतंग मे मिलता
जलने की दीन दशा में
वह फूल सदृश हो खिलता !

इस गगन यूथिका वन मे
तारे जूही से खिलते
सित शतदल से शशि- तुम क्यों
उनमें जाकर हो मिलते ?

मत कहो कि यही सफलता
कलियो के लघु जीवन की
मकरन्द भरी खिल जाये
तोडी जाये बेमन की ।

यदि दो घडियो का जीवन
कोमल वृन्तों मे बीते
कुछ हानि तुम्हारी है क्या
चुपचाप चू पडे जीते !

सब सुमन मनोरथ अञ्जलि
बिखरा दी इन चरणो में
कुचलो न कीट सा, इनके
कुछ है मकरन्द कणों मे ।

निर्मोह काल के काले
पट पर कुछ अस्फुट लेखा
सब लिखी पडी रह जाती
सुख दुख मय जीवन रेखा ।

आँसू

दुख सुख में उठता गिरता
संसार तिरोहित होगा।
मुड़ कर न कभी देखेगा
किसका हित अनहित होगा।

मानव जीवन वेदी पर
परिणय हो विरह मिलन का
दुख सुख दोनों नाचेंगे
है खेल आँख का मन का।

इतना सुख ले पल भर में
जीवन के अन्तस्तल से
तुम खिसक गये धीरे से
रोते अब प्राण विकल से

क्यों छलक रहा दुख मेरा
ऊषा की मृदु पलकों में
हाँ ! उलझ रहा सुख मेरा
सन्ध्या की घन अलकों में ।

लिपटे सोते थे मन में
सुख दुख दोनो ही ऐसे
चन्द्रिका अँधेरी मिलती
मालती कुञ्ज मे जैसे ।

अवकाश असीम सुखों से
आकाश तरंग बनाता
हँसता सा छाया-पथ में
नक्षत्र समाज दिखाता ।

नीचे विपुला धरणी है
दुख भार वहन सी करती
अपने खारे आँसू से
करुणा सागर को भरती ।

आँसू

धरणी दुख माँग रही है
आकाश छीनता सुख को
अपने को देकर उनको
हूँ देख रहा उस सुख को।

इतना सुख जो न समाता
अन्तरिक्ष में, जल-थल में
उनकी मुट्ठी मे बन्दी
था आश्वासन के छल में।

दुख क्या था, उनको मेरा
जो सुख लेकर यो भागे
सोते में चुम्बन लेकर
जब रोम तनिक सा जागे।

सुख मान लिया करता था
जिसका दुख था जीवन में
जीवन मे मृत्यु वसी है
जैसे बिजली हो घन में।

उनका सुख नाच उठा है
यह दुख-द्रुम-दल हिलने से
शृङ्गार चमकता उनका
मेरी करुणा मिलने से।

हो उदासीन दोनों से
दुख सुख से मेल करायें
ममता की हानि उठाकर
दो रूठे हुए मनाये।

चढ जाय अनन्त गगन पर
वेदना जलद की माला
रवि तीव्र ताप न जलाये
हिमकर का हो न उजाला।

नचती है नियति नटी सी
कन्दुक क्रीडा सी करती
इस व्यथित विश्व आँगन में
अपना अतृप्त मन भरती।

विभ्रम मदिरा से उठकर
आओ तम मय अन्तर में
पाओगे कुछ न, टटोलो
अपने बिन सूने घर में।

इस शिथिल आह से खिच कर
तुम आओगे,—आओगे
इस बढ़ी व्यथा को मेरी
रो रो कर अपनाओगे।

सन्ध्या की मिलन प्रतीक्षा
कह चलती कुछ मनमानी
ऊषा की रक्त निराशा
कर देती अन्त कहानी।

वेदना विकल फिर आई
मेरी चौदहो भुवन में
सुख कहीं न दिया दिखाई
विश्राम कहाँ जीवन मे ?

उच्छ्वास और आँसू में
विश्राम थका सोता है
रोई आँखो मे निद्रा
बनकर सपना होता है।

निशि, सो जावे जब उर मे
ये हृदय व्यथा आभारी
उनका उन्माद सुनहला
सहला देना सुखकारी।

तुम स्पर्श हीन अनुभव सी
नन्दन तमाल के तल से
जग छा दो श्याम - लता सी
तन्द्रा पल्लव विह्वल से।

सपनो की सोनजुही सब
बिखरे, ये बनकर तारा
सित - सरसिज से भर जावे
वह स्वर्गङ्गा की धारा।

आँसू

नीलिमा शयन पर बैठी
अपने नभ के आँगन में
विस्मृति का नील नलिन रस
बरसो अपाङ्ग के घन से।

चिर दग्ध दुखी यह वसुधा
आलोक माँगती तब भी
तम तुहिन बरस दो कन-कन
यह पगली सोए अब भी।

विस्मृति समाधि पर होगी
वर्षा कल्याण जलद की
सुख सोये थका हुआ सा
चिन्ता छुट जाय विपद की।

चेतना लहर न उठेगी
जीवन समुद्र थिर होगा
सन्ध्या हो सर्ग प्रलय की
विच्छेद मिलन फिर होगा ।।

रजनी की रोई आँखें
आलोक विन्दु टपकातीं
तम की काली छलनायें
उनको चुप - चुप पी जातीं ।

सुख अपमानित करता सा
जब व्यंग्य हँसी हँसता है
चुपके से तब मत रो तू
यह कैसी परवशता है ?

आँसू

अपने आँसू की अञ्जलि
आँखो मे भर क्यो पीता
नक्षत्र पतन के क्षण मे
उज्ज्वल होकर है जीता !

वह हँसी और यह आँसू
घुलने दे—मिल जाने दे
बरसात नई होने दे
कलियों को खिल जाने दे ।

चुन-चुन ले रे कन-कन से
जगती की सजग व्यथाये
रह जायेंगी कहने को
जन - रञ्जन - करी कथाये ।

जब नील निशा अञ्चल में
हिमकर थक सो जाते हैं
अस्ताचल की घाटी में
दिनकर भी खो जाते हैं।

नक्षत्र डूब जाते हैं
स्वर्गङ्गा की धारा में
बिजली बन्दी होती जब
कादम्बिनि की कारा में।

आँसू

मणिदीप विश्व-मन्दिर की
पहने किरणों की माला
तुम एक अकेली तब भी
जलती हो मेरी ज्वाला !

उत्ताल-जलधि-वेला में
अपने सिर शैल उठाये
निस्तब्ध गगन के नीचे
छाती मे जलन छिपाये।

संकेत नियति का पाकर
तम से जीवन उलझाये
जब सोती गहन गुफा मे
चञ्चल लट को छिटकाये।

आँसू

वह ज्वालामुखी जगत की
वह विश्व - वेदना - वाला
तब भी तुम सतत अकेली
जलती हो मेरी ज्वाला !

इस व्यथित विश्व पतझड की
तुम जलती हो मृदु होली
हे अरुणे ! सदा सुहागिनि
मानवता सिर की रोली !

जीवन सागर मे पावन
बडवानल की ज्वाला सी
यह सारा कलुष जलाकर
तुम जलो अनल वाला सी ।

जिसके आगे पुलकित हो
जीवन है सिसकी भरता
हॉ मृत्यु नृत्य करती है
मुसक्याती खडी अमरता ।

वह मेरे प्रेम विहॅसते
जागो, मेरे मधुवन मे
फिर मधुर भावनाओ का
कलरव हो इस जीवन मे ।

मेरी आहो मे जागो
सुस्मित में सोने वाले
अधरों से हँसते हँसते
आँखो से रोने वाले।

इस स्वप्नमयी ससृति के
सच्चे जीवन तुम जागो
मगल किरणो से रञ्जित
मेरे सुन्दर तम जागो।

अभिलाषा के मानस मे
सरसिज सी आँखे खोलो
मधुपो से मधु गुञ्जारो
कलरव से फिर कुछ बोलो।

आशा का फैल रहा है
यह सूना नीला अञ्चल
फिर स्वर्ण-सृष्टि सी नीचे
उसमें करुणा हो चचल ।

मधु-संसृति की पुलकावलि
जागो, अपने यौवन में
फिर से मरन्द-उद्गम हो
कोमल कुसुमो के वन मे ।

फिर विश्व माँगता होवे
ले नभ की खाली प्याली
तुम से कुछ मधु की बूँदें
लौटा लेने को लाली ।

आँसू

फिर तम प्रकाश झगड़े में
नव ज्योति विजयिनी होती
हँसता यह विश्व हमारा
बरसाता मञ्जुल मोती।

प्राची के अरुण मुकुर में
सुन्दर प्रतिबिम्ब तुम्हारा
उस अलस उषा में देखूँ
अपनी आँखों का तारा।

कुछ रेखाएँ हों ऐसी
जिनमें आकृति हो उलझी
तब एक झलक! वह कितनी
मधुमय रचना हो सुलझी।

जिसमें इतराई फिरती
नारी - निसर्ग - सुन्दरता
छलकी पड़ती हो जिसमें
शिशु की उर्मिल निर्मलता ।

आँखों का निधि वह मुख हो
अवगुण्ठन नील गगन सा
यह शिथिल हृदय ही मेरा
खुल जावे स्वयं मगन सा ।

मेरी मानस पूजा का
पावन प्रतीक अविचल हो
झरता अनन्त यौवन मधु
अम्लान स्वर्ण - शतदल हो ।

आँसू

कल्पना अखिल जीवन की
किरनो मे दृग तारा की
अभिषेक करे प्रतिनिधि वन
आलोकमयी धारा की ।

वेदना मधुर हो जावे
मेरी निर्दय तन्मयता
मिल जावे आज हृदय को
पाऊँ मैं भी सहृदयता ।

मेरी अनामिका सगिनि !
सुन्दर कठोर कोमलते !
हम दोनो रहें सखा ही
जीवन पथ चलते चलते ।

ताराओं की वे रातें
कितने दिन—कितनी घड़ियाँ
विस्मृति में बीत गईं वे
निर्मोह काल की कड़ियाँ।

उद्वेलित तरल तरंगे
मन की न लौट जावेगी
हाँ, उस अनन्त कोने को
वे सच नहला आवेंगी!

आँसू

जल भर लाते है जिसको
छूकर नयनो के कोने
उस शीतलता के प्यासे
दीनता दया के दोने ।

फेनिल उच्छ्वास हृदय के
उठते फिर मधुमाया में
सोते सुकुमार सदा जो
पलकों की सुख - छाया में ।

आँसू वर्षा से सिचकर
दोनों ही कूल हरा हो
उस शरद प्रसन्न नदी मे
जीवन - द्रव अमल भरा हो ।

आँसू

जैसे सरिता के तट पर
जो जहाँ खडा रहता है
विधु का आलोक तरल पथ
सम्मुख देखा करता है।

जागरण तुम्हारा त्यो ही
देकर अपनी उज्ज्वलता
इन छोटी बूँदों से भी
हर लेता सब पंकिलता।

इस छोटी सी सीपी मे
रत्नाकर खेल रहा हो
करुणा की इन बूँदों में
आनन्द उँडेल रहा हो।

आँसू

मेरे जीवन का जलनिधि
घन अंधकार ऊर्मिल हो
आकाश दीप सा तव वह
तेरा प्रकाश झिलमिल हो।

है पड़ी हुई मुँह ढँक कर
मन की जितनी पीडायें
वे हँसने लगें सुमन सी
करती कोमल क्रीडायें।

तेरा आलिगन कोमल
मृदु अमर-बेलि सा फैले
धमनी के इस बंधन में
जीवन ही न हो अकेले।

हे जन्म - जन्म के जीवन
साथी संसृति के दुख में
पावन प्रभात हो जावे
जागो आलस के सुख मे।

जगती का कलुष अपावन
तेरी विदग्धता पावे
फिर निखर उठे निर्मलता
यह पाप पुण्य हो जावे।

सपनों की सुख छाया में
जब तन्द्रालस संसृति है
तुम कौन सजग हो आई
मेरे मन मे विस्मृति है ?

तुम ! अरे, वही हाँ तुम हो
मेरी चिर - जीवन - संगिनि
दुख वाले दग्ध हृदय की
वेदने ! अश्रुमयि रङ्गिनि !

आँसू

जब तुम्हें भूल जाता हूँ
कुड्मल किसलय के छल मे
तब कूक हूक सी बन तुम
आ जाती रंगस्थल में।

बतला दो अरे, न हिचको
क्या देखा शून्य गगन में
कितना पथ हो चल आई
रजनी के मृदु निर्जन मे?

सुख तृप्त हृदय कोने को
ढकती तम-श्यामल छाया
मधु स्वप्निल ताराओ की
जब चलती अभिनय माया।

आँसू

देखा तुमने तब रुक कर
मानस कुमुदों का रोना
शशि किरणों का हँस-हँस कर
मोती मकरन्द पिरोना।

देखा बौने जलनिधि का
शशि छूने को ललचाना
वह हाहाकार मचाना
फिर उठ-उठ कर गिर जाना।

मुँह सिये, झेलतीं अपनी
अभिशाप ताप ज्वालायें
देखी अतीत के युग से
चिर-मौन शैल मालायें।

जिनपर न वनस्पति कोई
श्यामल उगने पाती हैं
जो जनपद - परस - तिरस्कृत
अभिशप्त कही जाती हैं।

कलियों को उन्मुख देखा
सुनते वह कपट कहानी
फिर देखा उड़ जाते भी
मधुकर को कर मनमानी।

फिर उन निराश नयनों की
जिनके आँसू सूखे हैं
उस प्रलय दशा को देखा
जो चिर वंचित भूखे हैं।

आँसू

सूखी सरिता की शय्या
वसुधा की करुण कहानी
कूलों में लीन न देखी
क्या तुमने मेरी रानी ?

सूनी कुटिया कोने में
रजनी भर जलते जाना
लघु स्नेह भरे दीपक का
देखा है फिर बुझ जाना।

सबका निचोड़ लेकर तुम
सुख से सूखे जीवन में
बरसो प्रभात हिमकन-सा
आँसू इस विश्व-सदन में।